इकाई 3 शिकारी-संग्रहकर्त्ता: पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- प्रागैतिहासिक काल की शिकारी-संग्रहकर्त्ता अवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों को समझ सकेंगे,
- उन पुरातात्विक प्रमाणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे जिनसे इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है,
- इस काल के लोगों के जीवन यापन के तरीकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- उन औजारों के बारे में जान सकेंगे जिनका वे उपयोग करते थे। इसके अलावा इस बात की भी जानकारी मिल सकेगी कि प्रागैतिहासिक कला उनके संगठन के विषय में जानने में कितना सहयोग प्रदान कर सकती है।

3.1 प्रस्तावना

आज बीसवीं शताब्दी में हमें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्य जाति ने अपने अस्तित्व के आरम्भ से लेकर आज तक का 99% हिस्सा शिकारी/संग्रहकर्त्ता के रूप में बिताया है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य ने मात्र 10,000 वर्ष पूर्व कृषि द्वारा उत्पादन करना सीखा। इससे पहले वह पूर्णत: प्रकृति पर निर्भर था। अपने भोजन के लिए या तो वे प्रकृति से जड़ें, फल, मूल आदि एकत्र करते थे या पक्षियों, जानवरों और मछलियाँ पकड़कर अपना भोजन जुटाते थे। अपने अस्तित्व के अधिकांश कालों में मनुष्य प्रकृति और पर्यावरण पर पूर्णत: आश्रित रहा। इस तथ्य से कई बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि उनके भोजन प्राप्त करने के तरीकों का प्रभाव उनके प्रकृति से संबंध और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण पर पड़ा। दूसरी यह कि शिकारी/संग्रहकर्त्ता एक समूह में रहते थे और इसका संबंध उनके द्वारा भोजन जुटाने की पद्धति से है। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अन्य समूहों की अपेक्षा शिकारी/संग्रहकर्त्ता समूहों की बनावट कही ज्यादा लचीली थी।

मनुष्य काफी अरसे तक शिकारी/संग्रहकर्त्ता का जीवन बिताता रहा। इसलिए इस काल के मानव इतिहास को जानना जरूरी है। विश्व में ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहां आज भी लोग शिकारी/संग्रहकर्त्ता का जीवन जी रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मानव इतिहास में हुए सांस्कृतिक बदलावों के साथ-साथ हम उनकी संस्कृति के बारे में भी जानकारी हासिल करें। पर हम शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के बारे में जानेंगे कैसे? शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के रहने के ढंग, उनके सामाजिक संगठन और उनके पर्यावरण आदि विभिन्न पहलुओं पर कई मानव जाति

वैज्ञानिकों /मानवेताओं ने प्रकाश डाला है। इन्होंने जीवित शिकारी /संग्रहकर्त्ता समूहों का अध्ययन किया है। इनके कार्यों से अतीत के शिकारी /संग्रहकर्त्ता समुदायों की जीवन पद्वति और स्थिति को जानने की अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। इन समुदायों के बारे में जानने के लिए हमें उन पुरातत्ववेताओं और अन्य वैज्ञानिकों की सहायता लेनी पड़ती है, जो उन समुदाय विशेष के औजारों, हड्डियों के अवशेषों और पर्यावरण विशेष के विशेषज्ञ होते हैं। इस प्रकार के अध्ययन के लिए कई प्रकार के शैक्षणिक संकायों का सहारा लेना पड़ता है। उनके जीवन को जानने के लिए कई प्रकार के साक्ष्यों जैसे जानवरों के अवशेष, पौधे और अन्य जैव अवशेषों का अध्ययन करना पड़ता है और उनका संबंध शिकारी /संग्रहकर्त्ता अवस्था से जोड़ना पड़ता है और इनसे आदि मानव के तत्कालीन भौतिक पर्यावरण को जानने और इसके उपयोग को समझने की अंतर्दृष्टि मिलती है।

शिकारी /संग्रहकर्त्ताओं द्वारा उपयोग में लाए गए पत्थर के औजार पाए गए हैं। इन औजारों को इनके प्रकार तथा काल के अनुसार मध्यपाषाणीय, पुरापाषाणीय आदि वर्गों में विभाजित किया गया है। इन औजारों के बनाने की तकनीक पर भी पुरातत्ववेत्ता विचार करते हैं। पशुओं के अवशेषों के अध्ययन से इस बात की जानकारी मिलती है कि प्रागैतिहासिक काल में उनका किस प्रकार उपयोग किया जाता था। पत्थर पर की गयी खुदाई और चित्रकारी से भी प्रागैतिहासिक काल के लोगों की अर्थव्यवस्था और समाज का पता चलता है।

3.2 पुरापाषाण युग

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था। अभिनूतन युग (20 लाख वर्ष पूर्व) एक भूवैज्ञानिक काल है, जिसमें बर्फ युग अपने अन्तिम चरण में था। इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। पुरापाषाण युग के पत्थर के औजारों के वर्गीकरण के संबंध में भारत के पुरातत्ववेत्ताओं के बीच मतभेद है:

- कुछ विद्वान धारदार ब्लेड (Blade) और लक्षणी वाले काल को "उच्च पुरापाषाण" कहते हैं।
- कुछ विद्वान उच्च पुरापाषाण को यूरोपीय पुरापाषाण संस्कृति से जोड़ते हैं।

पर अब उच्च पुरापाषाण का प्रयोग भारतीय संदर्भ में भी होता है।

3.2.1 पुरापाषाण युग के औजार

पर्यावरण और जलवायु में हुए परिवर्तन और मनुष्य द्वारा बनाए गए पत्थर के औजारों की प्रकृति के आधार पर पुरापाषाण संस्कृति को तीन चरणों में बांटा गया है।

- निचले पुरापाषाण चरण के औजारों में मुख्यत: हाथ की कुल्हाड़ी, तक्षणी, काटने का औजार आदि हैं।
- मध्य पुरापाषाण युगीन उद्योग काटने के औजारों पर आधारित था, और
- उच्च पुरापाषाण युग की विशेषता थी — तक्षणी और खुरचनी।

अब हम इस काल के कुछ औजारों और उनके उपयोग के बारे में चर्चा करेंगे।

- हाथ की कुल्हाड़ी (Handaxe) — इसका मूठ चौड़ा और आगे का हिस्सा पतला होता है। इसका उपयोग काटने या खोपने के लिए होता होगा।
- चीरने का औजार (Cleaver) — इसमें दुहरी धार होती है। इसका उपयोग पेड़ों को काटने और चीरने के लिए होता था।
- काटने के औजार (Chopper) — एक बड़ा स्थूल औजार जिसमें एक तरफा धार होती है और इसका उपयोग काटने के लिए किया जाता है।
- काटने का औजार (Chopping tool) — यह भी चौपर के समान एक बड़ा स्थूल औजार है पर इसमें दुहरी धार होती है, और इसमें कई पट्टे होते हैं। इसका उपयोग भी किसी चीज को काटने के लिए होता था, पर अधिक नुकीली धार वाला होने से यह चौपर से अधिक कारगर होता था।
- पत्तर (Flake) — यह एक प्रकार का औजार होता है, जिसे पत्थर को तोड़कर बनाया जाता है। पत्तर की सतह पर सकारात्मक समाघात और इसके सारभाग में एक नकारात्मक

समाघात (Negative bulb of percussion) होता है। जिस स्थान पर पत्थर के हथौड़े से चोट की जाती है उसे समाघात स्थल कहते हैं। इस चोट से जो गोल, हल्का उत्तल हिस्सा कट कर निकलता है उसे सकारात्मक समाघात कहते हैं। इस चोट के परिणाम स्वरूप सारभाग का जो हिस्सा अवतल हो जाता है उसे नकारात्मक समाघात कहते हैं। पत्तर बनाने की कुछ तकनीकें हैं: फ्री फ्लेकिंग तकनीक, स्टेप फ्लेकिंग तकनीक, ब्लॉक आन ब्लॉक तकनीक, द्विध्रुवीय तकनीक आदि।

- खुरचनी (Side scraper) — इसमें एक पत्तर या ब्लेड होता है और इसका किनारा धारदार होता है। इसका उपयोग पेड़ की खाल या जानवरों का चमड़ा उतारने में किया जाता होगा।
- तक्षणी (Burin) — यह भी पत्तर या ब्लेड के समान ही होता है, पर इसका किनारा दो तलों के मिलने से बनता है। तक्षणी के काम वाले हिस्से की लम्बाई 2–3 से. मी. से अधिक नहीं होती है। इसका उपयोग मुलायम पत्थरों, हड्डियों, क्रोड़ों या गुफाओं की दीवारों पर नक्काशी के लिए होता है।

3.2.2 पुरापाषाण युग की बस्तियाँ

अब हम पढ़ेंगे कि शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं द्वारा प्रयुक्त औजार पुरातत्ववेत्ताओं को किन-किन क्षेत्रों में मिले हैं। इन औजारों के क्षेत्रीय फैलाव के बारे में पता चलने पर न केवल हमें शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के निवास स्थलों का पता चलेगा, बल्कि उस पर्यावरण की भी जानकारी मिलेगी, जिसमें वे रहते थे।

विभिन्न क्षेत्रों में इनका अध्ययन करें:

i) कश्मीर घाटी दक्षिण पश्चिम में पीर जंगल पहाड़ियों और उत्तर पूर्व हिमालय से घिरी है। कश्मीर में लिद्दर नदी के किनारे पहलगांव से एक हाथ की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई थी। किंतु पुरापाषाण युग के औजार कश्मीर में ज्यादा नहीं मिलते क्योंकि हिमानी युग में कश्मीर में अत्यधिक ठंड होती थी। पोतवार क्षेत्र (आज का पश्चिमी पंजाब और पाकिस्तान) पीर पंजल और नमक पर्वत श्रृंखला के बीच में पड़ता है। इस इलाके में विवर्तनिक बदलाव आया था और इस क्रम में सिंधु और सोहन नदियों की उत्पत्ति हुई थी। सोहन घाटी में हाथ की कुल्हाड़ी और काटने के औजार मिले हैं। ये औजार अडियाल, बलवाल और चौन्टरा जैसी महत्वपूर्ण पुरापाषाणीय बस्तियों में पाये गए हैं। ब्यास, बाण, गंगा और सिरसा नदियों के किनारे भी पुरापाषाण युग के औजार पाए गए हैं।

ii) लूनी नदी (राजस्थान) के आसपास के क्षेत्र में कई पुरापाषाण युगीन बस्तियाँ पाई गई हैं। लूनी नदी का उद्गम अरावली क्षेत्र में हुआ था। चित्तौढ़गढ़ (गंभीर नदी घाटी) कोटा (चंबल नदी घाटी) और नगरई (बेराच नदी घाटी) में पुरापाषाण युग के औजार पाए गए हैं। मेवाड़ की वगांव और कदमली नदियों के आसपास भी मध्य पुरापाषाण युगीन बस्तियाँ पाई गई हैं। इन इलाकों से कई प्रकार की खुरचनी, बेधक औजार और नुकीले औजार भी पाए गए हैं।

iii) गुजरात में साबरमती, माही और उनकी सहायक नदियों के आसपास पुरापाषाण युग के अनेक औजार पाए गए हैं। साबरमती नदी अरावली से निकल कर खम्बात की खाड़ी में जा गिरती है। ओरसंग घाटी के नजदीक भंड़ारपुर में भी मध्य पुरापाषाण युग के औजार पाए गए हैं। सौराष्ट्र में भद्दर नदी के आसपास पुरापाषाण युग के अनेक औजार मिले हैं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां, खुरचनी, काटने के औजार, नुकीले औजार, बेधक औजार आदि। कच्छ क्षेत्र में भी पुरापाषाण युग के अनेक औजार मिले हैं जैसे — खुरचनी, हाथ की कुल्हाड़ी और काटने के औजार।

iv) नर्मदा नदी मैकॉल पर्वत श्रृंखला से निकलती है और खम्बात की खाड़ी में जाकर मिल जाती है। नर्मदा के समतलों में पुरापाषाण युग के अनेक औजार पाए गए हैं, जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां और चीरने के औजार। विंध्य क्षेत्र में अवस्थित भीमबेतका (भोपाल के निकट) में पहले एश्यूलियन (Acheulian) संस्कृति के औजार उपयोग में लाए जाते थे किंतु वहां बाद में मध्य पुरापाषाण युगीन संस्कृति का आगमन हुआ।

1.

2.

3.

4.

5.

6.
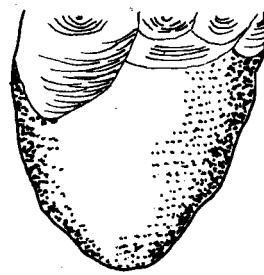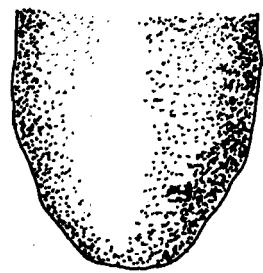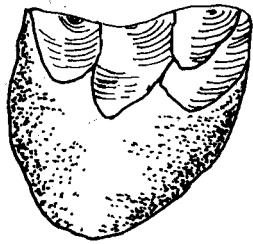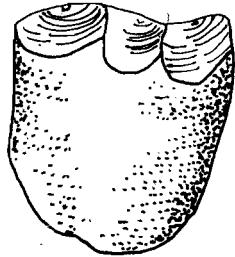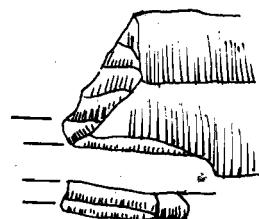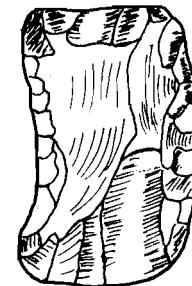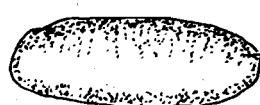
1. चीरने के औज़ार, 2. काटने के औज़ार, 3. काटने के औज़ार,
4. खुरचनियां, 5. तक्षणी, 6. पत्तर

v) ताप्ती, गोदावरी, भीमा और कृष्णा नदियों के आसपास भी कई पुरापाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। पुरापाषाण युग की बस्तियों की अवस्थिति का संबंध पर्यावरण संबंधी बदलाव से भी है जैसे भू-स्खलन, मिट्टी की प्रकृति आदि। ताप्ती की तलहटी में काफी गहराई तक रेगुर काली मिट्टी पाई जाती है। भीमा और कृष्णा नदियों के ऊपरी हिस्से के आसपास के क्षेत्रों में कम पुरापाषाणीय बस्तियाँ पाई गई हैं। महाराष्ट्र में नवासा के नजदीक चिरकी में हाथ की कुल्हाड़ियां, काटने के औजार, बेधक औजार, खुरचनी और मिट्टी तोड़ने के औजार पाए गए हैं। महाराष्ट्र में कोरेगांव, चन्दौली और शिकारपुर पुरापाषाण युग की अन्य प्रमुख बस्तियाँ हैं।

vi) पूर्वी भारत में रासे नदी (सिंहभूम, बिहार) में भी हाथ की कुल्हाड़ियां, काटने के औजार, पत्तर आदि अनेक पुरापाषाण युग के औजार पाए गए हैं। सिंहभूम में भी बहुत सी पुरापाषाण युग की बस्तियाँ मिली हैं। इन बस्तियों में मुख्यत: हाथ की कुल्हाड़ियां और काटने के औजार पाए गए हैं। दामोदर और सुवर्णरेखा नदियों की घाटी से भी पुरापाषाण युग के औजारों के पाए जाने की सूचना मिली है। यहां भी पुरापाषाणीय संस्कृति की अवस्थिति स्थलाकृतिक विशेषताओं से प्रभावित हुई है। उड़ीसा में वैतरनी, ब्राहमणी और महानदी के डेल्टा क्षेत्र में भी पुरापाषाण युग के कुछ औजार पाए गए हैं।

उड़ीसा में म्यूरभंज में बुहार बलंग घाटी में प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युग के कई औजार पाए गए हैं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां, खुरचनी, नुकीले औजार और पत्तर।

vii) माल प्रभा, घाट प्रभा और कृष्णा की सहायक नदियों के आसपास पुरापाषाण युग की कई बस्तियाँ पाई गई हैं। घाट प्रभा नदी घाटी में एश्यूलियन (Acheulian) हाथ की कुल्हाड़ियां काफी संख्या में पाई गई हैं। अंगवाडी और बागलकोट घाट प्रभा नदी के पास स्थित दो प्रमुख बस्तियाँ हैं जहां प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युग के औजार पाए गए हैं। तमिलनाडु में पलर, पेनियारे और कावेरी में भी पुरापाषाण युग के अनेक औजार पाए गए हैं। अतिरमपक्कम और गुड्डियम में प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युगीन औजार पाए गए हैं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां, खुरचनी, पत्तर, ब्लेड आदि।

3.2.3 जीवन यापन के तरीके

पुरापाषाण युग की बस्तियों में भारतीय और विदेशी मूल के जानवरों के अवशेष काफी मात्रा में पाए गए हैं। नर बानर, जिराफ, कस्तूरी मृग, बकरी, भैंसा, गाय और सूअर स्वदेशी मूल के पशु प्रतीत होते हैं। ऊँट और घोड़े से उत्तरी अमरीका से संबंध का पता चलता है। दरियाई घोड़ा और हाथी मध्य अफ्रीका से भारत आये थे। ये हिमालय की पूर्वी और पश्चिमी सीमा से होकर आये होंगे। अधिकांश जानवर भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा से होकर आये। उस समय अफ्रीका और भारत के बीच काफी आदान-प्रदान होता था।

पुरापाषाण युग के मनुष्य भोजन के लिए किन स्रोतों पर निर्भर करते थे ? इस बारे में जानकारी जानवरों के अवशेषों से मिलती है। इन अवशेषों से पता चलता है कि लोग शिकारी और संग्रहकर्त्ता अवस्था में थे। एक इलाके में रहने वाले मनुष्यों और पशुओं की संख्या के बीच संतुलन रहा होगा। उस समय के लोगों ने आसपास पाये जाने वाले पशुओं और पेड़ों का भोजन के रूप में उपयोग किया होगा। मनुष्य छोटे और मध्यम आकार के जानवरों, विशेषत: खुरों वाले पशुओं का शिकार करता होगा। साथ ही वह हिरण, गैंडे और हाथी का भी शिकार करता होगा। इस काल में किसी खास प्रकार की शिकारी प्रवृत्ति का पता नहीं चलता है। कहीं-कहीं कुछ विशेष प्रकार के जानवरों के अवशेष बहुतायत में पाए गए, लेकिन इसका कारण यह है कि उस इलाके में उन विशेष जानवरों की बहुतायत थी और उनका शिकार करना आसान था। ऐसा लगता है कि शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं द्वारा पशुओं और पेड़ों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करना काफी हद तक शुष्क/आद्र ऋतुचक्र पर आधारित था। पुरापाषाण युग के लोग मुख्य रूप से बैल, गवल, नीलगाय, भैंसा, चिंकारा, हिरण, बारहसिंगे, साम्भर, जंगली सूअर, कई तरह के पक्षियों, कछुओं, मछलियों, मधु और फलदायक पौधों के फलों, मूल, बीज और पत्तों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे।

यह कहा जाता है कि आज के वर्तमान शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं द्वारा शिकार किए जाने वाले जानवरों से अधिक महत्व शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं द्वारा संग्रहित भोजन का है। संग्रहित भोजन

के अवशेष शिकार के अवशेषों की तुलना में अधिक समय तक सुरक्षित रहते हैं। पुरापाषाण युग के लोगों की खाने-पीने की आदतों के बारे में पता लगाना मुश्किल है। ये लोग किस प्रकार के पौधों या फलों का भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे इस बारे में हमें उस प्रकार की जानकारी उपलब्ध नहीं है जैसी कि आजकल के शिकारी /संग्रहकर्त्ता समूहों के बारे में उपलब्ध हैं। यह मुमकिन है कि पुरापाषाण युग के लोग पशुओं के साथ-साथ फल-फूल को भी भोजन के रूप में इस्तेमाल करते होंगे।

पत्थर पर की गई चित्रकारी और खुदाई से भी हमें पुरापाषाण युग के लोगों के रहन-सहन और सामाजिक जीवन के बारे में पता चलता है। सबसे पुरानी चित्रकारी उत्तर पुरापाषाण युग की है। विन्धय क्षेत्र में स्थित भीमवेटका में विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है। प्रथम काल में उत्तर पुरापाषाण युग की चित्रकारी में हरे और गहरे लाल रंग का उपयोग हुआ है। इन चित्रों में भैंसे, हाथी, बाघ, गैंडे और सूअर के चित्र प्रमुख हैं। ये चित्र काफी बड़े हैं और कुछ की लंबाई 2 से 3 मीटर तक है। पुरापाषाण युग के लोगों के शिकारी जीवन की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के जानवरों के कितने और किन रूपों में चित्र मिले हैं इसका बारीकी से अध्ययन करना होगा। खुदाई और चित्रकारी से पता चलता है कि शिकार ही जीवन यापन का मुख्य साधन था। इन चित्रों में बनी शारीरिक संरचना के आधार पर पुरुष और स्त्री में सरलता से भेद किया जा सकता है। इन चित्रों से यह भी पता चलता है कि पुरापाषाण युग के लोग छोटे-छोटे समूहों में रहते थे और उनका जीवन निर्वाह पशुओं और पेड़ पौधों पर निर्भर था।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: निम्नलिखित प्रश्नों को सावधानी से पढ़ें और सही तथा सबसे उपयुक्त उत्तर पर निशान लगायें।

1 सामाजिक विकास का कौन सा काल शिकारी/संग्रहकर्ता चरण का प्रतिनिधित्व करता है:

क) पुरापाषाण युग

ख) मध्य पाषाण युग

ग) पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग

घ) नवपाषाण युग

2 प्रागैतिहासिक शिकारी/संग्रहकर्त्ता समाज का अध्ययन कैसे किया जाता है ?

क) लिखित स्रोतों की सहायता से

ख) मुद्रा विषयक स्रोतों की सहायता से

ग) शिलालेख स्रोतों की सहायता से

घ) पुरातत्व अवशेषों की सहायता से

3 अभिनूतन (Pleistocene) युग:

क) बहुत ठंडा था।

ख) बहुत गर्म था।

ग) तापक्रम सामान्य था।

घ) बहुत सूखा था।

4 पुरापाषाण संस्कृति को तीन चरणों में निम्नलिखित में से किस आधार पर विभाजित करते हैं:

क) जलवायु में परिवर्तन

ख) पत्थर के औजारों के प्रकार

ग) पशु-पक्षी अवशेषों

घ) पत्थर के औजारों के प्रकार, मौसम में परिवर्तन और पशु-पक्षी अवशेषों

5 पुरापाषाण युग की अर्थव्यवस्था:

क) भोजन उत्पादन पर आधारित थी।

ख) शिकार पर आधारित थी।

ग) जंगली पौधों से प्राप्त कंदमूल फल के संग्रह पर आधारित थी।

घ) जानवरों के शिकार और जंगली पौधों से प्राप्त कंदमूल फल के संग्रह पर आधारित थी।

3.3 मध्य पाषाण युग

मध्य पाषाण युग का आरम्भ ई. पूर्व 8000 के आसपास हुआ। यह पुरापाषाण और नव पुरापाषाण युग के बीच का संक्रमण काल है। धीरे-धीरे तापक्रम बढ़ा और मौसम गरम और सूखा होने लगा। परिवर्तन से मनुष्य का जीवन प्रभावित हुआ। पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों की किस्मों या प्रजातियों में भी परिवर्तन आया। औजार बनाने की तकनीक में परिवर्तन हुआ और छोटे पत्थरों का उपयोग किया जाने लगा। मनुष्य मूलत: शिकारी-संग्रहकर्ता ही रहा, पर शिकार करने की तकनीक में परिवर्तन हो गया। अब न केवल बड़े बल्कि छोटे जानवरों का भी शिकार करने लगा। मछलियाँ पकड़ने लगा और पक्षियों का भी शिकार करने लगा। यह भौतिक और पारिस्थितिकी परिवर्तन पत्थर पर हुई चित्रकारी से भी प्रतिबिम्बित होता है। अब हम इस युग में उपयोग में लाए जाने वाले कुछ औजारों की चर्चा करेंगे।

2. ब्लेड

3.3.1 मध्य पाषाण युग के औजार

मध्य पाषाण युग के औजार छोटे पत्थरों से बने हुए हैं। ये सूक्ष्म औजार आकार में काफी छोटे हैं और इनकी लम्बाई 1 से 8 से. मी. तक है। कुछ सूक्ष्म औजारों का आकार ज्यामितीय होता है। ब्लेड, क्रोड़, नुकीले, त्रिकोण, नवचन्द्राकार और कई अन्य प्रकार के औजार मध्य पाषाण काल में उपयोग में लाए जाने वाले मुख्य ज्यामितीय औजार हैं। इनके अलावा इस काल में पुरापाषाण युग के औजार जैसे तक्षणा, खुरचनी और यहां तक कि गंडासा भी मिलते हैं।
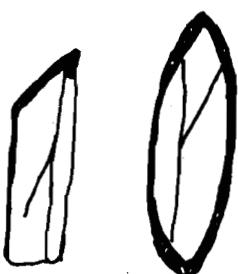
i) **ब्लेड (Blade) :** यह एक प्रकार का विशेषीकृत पत्तर होता है। इसकी लम्बाई इसकी चौड़ाई से दुगनी होती है। इनका उपयोग संभवत: काटने के लिए किया जाता होगा। मध्य पाषाण युग में औजार बनाने की तकनीक को फ्लूटिंग (Fluting) कहा जाता है। इसमें सार मात्र पर प्लेटफार्म के नुकीले सिरे से प्रहार किया जाता है। हमें कुछ धारदार ब्लेड भी मिले हैं। ये चौड़े, मोटे और लंबे होते हैं। ब्लेड को धार देने से उसमें पैनापन आता है। कुछ ऐसे ब्लेड पाए गए हैं, जिनके एक या दोनों सिरे धारदार होते हैं अन्यथा दोनों किनारे धारदार होते हैं। ये ब्लेड साधारण ब्लेडों से कहीं अधिक पैने तथा कारगर होते हैं।

3. नुकीला औजार

ii) **क्रोड (Core) :** क्रोड साधारणतया आकार में बेलनाकार होता है जिसकी पूरी लंबाई में फ्लूटिंग के निशान होते हैं और इसमें एक सपाट प्लेटफार्म होता है।

iii) **नुकीला औजार (Point) :** नुकीला औजार एक प्रकार का टूटा तिकोना ब्लेड होता है। इसके दोनों सिरे ढलवां तथा धारदार होते हैं। इसके सिरे सरल रेखीय या वक्र रेखीय भी हो सकते हैं।

4. त्रिकोण

iv) **त्रिकोण (Triangle) :** इसमें साधारणत: एक सिरा और एक आधार होता है और सिरे को धारदार बनाया जाता है। इसका उपयोग काटने के लिए किया जाता है या इसे तीर के अग्र भाग में भी लगाया जाता है।

v) **नवचन्द्राकार (Lunate) :** नवचन्द्राकार औज़ार भी एक तरह का ब्लेड होता है लेकिन इसका एक सिरा वृत्ताकार होता है। यह एक वृत्त के हिस्से के समान मालूम होता है। इनका उपयोग अवतल कटाई के लिए किया जा सकता था या ऐसे दो औजारों को मिलाकर तीर का अग्रभाग तैयार किया जा सकता था।

5. नवचन्द्राकार

vi) **समलम्ब औजार (Trapeze) :** यह भी एक ब्लेड के समान ही दिखाई पड़ता है। इसके एक से अधिक सिरे धारदार होते हैं। किसी-किसी समलम्ब औजारों के तीन सिरे धारदार होते हैं। इनका उपयोग तीर के अग्रभाग के रूप में होता होगा।

6. समलम्ब औजार

3.3.2 मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ

अब हम भारत में मध्य पाषाण युग की महत्वपूर्ण बस्तियों के विषय में चर्चा करेंगे।

i) पचपद्र नदी घाटी और सोजत (राजस्थान) इलाके में सूक्ष्म औजार काफी मात्रा में मिले हैं। यहां पाई गई एक महत्वपूर्ण बस्ती तिलवारा है। तिलवारा में दो सांस्कृतिक चरण पाए गए हैं। पहला चरण मध्य पाषाण युग का प्रतिनिधित्व करता है तथा इस चरण की विशेषता सूक्ष्म औजारों का पाया जाना है। दूसरे चरण में चाक पर बने हुए मिट्टी के बर्तन और लोहे के टुकड़े इन सूक्ष्म औजारों के साथ पाए गए हैं। मध्य पाषाण युग की बड़ी बस्तियों में से एक है — बगोर (राजस्थान) जो कोठारी नदी के किनारे स्थित है। बगोर में खुदाई की गई तो तीन सांस्कृतिक अवस्थाएं पाई गईं। रेडियो कार्बन डेटिंग से अवस्था-I या संस्कृति की सबसे प्रारंभिक अवस्था का समय 5000 से 2000 ई. पू. निश्चित किया गया है

ii) गुजरात में ताप्ती, नर्मदा, माही और साबरमती नदियों के आसपास भी कई मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। अक्खज, बलसाना, हीरपुर और लंघनाज साबरमती नदी के पूरब में स्थित हैं। लंघनाज का विस्तार से अध्ययन किया गया है। लंघनाज में तीन सांस्कृतिक अवस्थाएं पाई गई हैं। अवस्था-I में सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। सूक्ष्म औजारों में ब्लेड, त्रिकोणीय औजार, अर्धचन्द्रकार औजार, खुरचनी और तक्षणी आदि प्रमुख हैं।

iii) विन्ध्य और सतपुरा इलाके में मध्य पाषाण युग की अनेक बस्तियाँ पाई गई हैं। इलाहाबाद में प्रतापगढ़ इलाके में सराय नहर राय (उत्तर प्रदेश) का विस्तार से अध्ययन किया गया है। कैमूर पर्वत श्रृंखला में मध्य पाषाण युग की दो प्रमुख बस्तियाँ पाई गई हैं — मोरहाना पहाड़ (उत्तर प्रदेश) और लेखहीया (उत्तर प्रदेश)। भीमबेटका (मध्य प्रदेश) में अनेक सूक्ष्म औजार मिले हैं। भीमबेटका में पारिस्थितिकी संतुलन बसने के लिए अनुकूल था। भीमबेटका के दक्षिण में आदमगढ़ (होशंगाबाद) में मध्य पाषाण युग की एक प्रमुख बस्ती पाई गई है।

iv) कोंकण के तटीय इलाके और आन्तरिक पठार में भी मध्य पाषाण युग के औजार पाए गए हैं। कोंकण इलाके में कसूशोअल, जनयेरी, दमालगो और जलगढ़ जैसी कुछ प्रमुख बस्तियाँ पाई गई हैं। असिताश्म के बने दक्षिण पठार में भी अनेक मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। धुलिया और पूना जिले में सूक्ष्म औजार पाए गए हैं।

v) छोटा नागपुर पठार, उड़ीसा के तटीय मैदानी क्षेत्र, बंगाल डेल्टा, ब्रह्मपुत्र घाटी और शिलांग पठारी इलाके में भी सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। प्राक् नवपाषाण युग के सूक्ष्म औजार छोटा नागपुर पठार में पाए गए हैं। मयूरभंज, कियोनझर और सुन्दरगढ़ में भी सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। पश्चिम बंगाल में दामोदर नदी के किनारे बीमानपुर की भी खुदाई हुई है। यहां पर भी सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। मेघालय की गारो पहाड़ियों में स्थित सेबालगिरी- 2 में भी प्राक् नव पाषाणयुगीन सूक्ष्म औजार पाए गए हैं।

vi) कृष्णा और भीमा नदी में भी अनेक सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। ये सूक्ष्म औजार नव पाषाण संस्कृति के चरण में भी पाए गए हैं। कर्नाटक पठार के पश्चिमी किनारे पर स्थित संगनकल में अनेक औजार मिले हैं जैसे क्रोड़, नुकीले औजार, अर्धचन्द्राकार पत्तर आदि।

गोदावरी डेल्टा में भी सूक्ष्म औजार काफी मात्रा में पाए गए हैं। यहां पर पाए गए ये औजार नवपाषाणीय संस्कृति से सम्बद्ध हैं। कुरनूल इलाके में भी काफी मात्रा में सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर इलाके में रेणीगुंटा में सूक्ष्म औजार पाए गए हैं। चूंकि मध्य पाषाण युग की काल सीमा काफी लंबी थी और भारत में अनेक मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। अत: विभिन्न बस्तियों को कालक्रमानुसार और वहां प्राप्त भौतिक अवशेषों के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। कालक्रम तथा सूक्ष्म औजारों की बहुतायत मध्य पाषाण युग के सूचक हैं। कुछ बस्तियाँ कालक्रमानुसार बाद की हैं और

मध्य पाषाण संस्कृति से प्रभावित हैं। ये सभी बस्तियाँ मध्य पाषाणीय परम्परा की बस्तियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं। बगोर, सराय-नहर राय, और अदमगढ़ में मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई है।

3.3.3 जीवन यापन के तरीके

आरंभिक मध्यपाषाणीय बस्तियों से जानवरों जैसे भेड़, बकरी, भैंस, सूअर, कुत्ता, हाथी, दरियाई घोड़ा, बनैले सूअर, गवल, गीदड़, भेड़िए, चीते, साम्भर, बारह सिंघे, खरगोश, काले हिरण, मृग, कछुए, साही, नेवले, छिपकली, मवेशियों आदि के अवशेष पाए गए हैं। इनमें से बहुत सी प्रजातियां मध्य पाषाण परम्परा के अंतर्गत विद्यमान रहीं। मध्य पाषाणीय परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली बस्तियों से जंगली भेड़, जंगली बकरी, गदहा, हाथी, लोमड़ी, गवल, दरियाई घोड़ा, साम्भर, खरगोश, साही, छिपकली, चूहा, मुर्गी, कछुआ आदि नहीं पाए गए हैं। जंगली भैंसा, ऊँट, भेड़िया, गैंडा और नीलगाय मध्य पाषाणीय परम्परा के अंतर्गत पाए गए हैं। ये प्रजातियां आरंभिक मध्यपाषाणीय युग में अनुपस्थित थीं। किसी विशेष काल में पशुओं का पाया जाना और न पाया जाना वस्तुतः जलवायु और पर्यावरण संबंधी परिवर्तन पर निर्भर करता है।

मध्य पाषाण युग के दौरान लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन खाते थे। मध्य पाषाण युग की अनेक बस्तियों जैसे लंघनाज और तीलवारा से मछली, कछुए, खरगोश, नेवले, साही, मृग, नीलगाय के अवशेष पाए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भोजन के रूप में इनका उपयोग किया जाता होगा। शिकार करने और मछली मारने के अलावा मध्य पाषाण युग के लोग जंगली कन्द मूल, फल और मधु आदि का भी संग्रह करते थे और यह उनके भोजन का पूर्ण हिस्सा था। ऐसा प्रतीत होता है कि पौधों से प्राप्त भोजन शिकार से प्राप्त भोजन की अपेक्षा अधिक सुलभ था। कुछ इलाकों में घास, खाने योग्य जड़, बीज, काष्ठफल और फल काफी मात्रा में उपलब्ध थे और लोग भोजन के साधन के रूप में इनका उपयोग करते होंगे। कुछ वर्तमान शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि उनका मुख्य भोजन फल-फूल ही है। शिकार से प्राप्त भोजन केवल पूरक का ही काम करता है। मध्य पाषाण युग के संदर्भ में पशु मांस और पेड़-पौधों से प्राप्त भोजन के बीच तारतम्य स्थापित करना मुश्किल है, क्योंकि पौधों के अवशेष जल्दी नष्ट हो जाते हैं। यह भी तर्क दिया जा सकता है कि काफी हद तक भोजन की पूर्ति शिकार के माध्यम से होती थी।

पत्थर की गुफाओं की दीवारों पर बनाए गये चित्रों और नक्काशियों से मध्य पाषाण युग के सामाजिक जीवन और आर्थिक क्रिया कलाप से संबंधित काफी जानकारी मिलती है। भीमबेटका, आदमगढ़, प्रतापगढ़, मिर्जापुर मध्य पाषाण युग की कला और चित्रकला की दृष्टि से समृद्ध हैं। इन चित्रों से शिकार करने, भोजन जुटाने, मछली पकड़ने और अन्य मानवीय
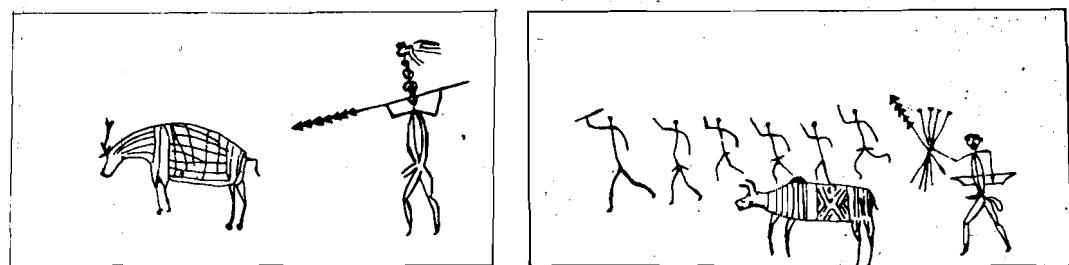
7. मध्य पाषाण युग के चित्र

क्रिया कलापों की भी झलक मिलती है। भीमबेटका में भी काफी चित्र बने मिले हैं। इनमें बहुत से जानवरों जैसे जंगली सूअर, भैंसे, बन्दर और नीलगाय के चित्र बने मिले हैं। इन चित्रों और नक्काशियों से यौन संबंधों, बच्चों के जन्म, बच्चे के पालन पोषण और शव दफन से संबंधित अनुष्ठानों की भी झलक मिलती है। इन सब बातों से यह संकेत मिलता है कि मध्य पाषाण युग में पुरापाषाण युग की अपेक्षा सामाजिक संगठन अधिक सुदृढ़ हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य पाषाण युग के लोगों का धार्मिक विश्वास पारिस्थितिकी और भौतिक परिस्थितियों से प्रभावित था।

बोध प्रश्न 2

1 मध्य पाषाण युग के औजार हैं:

क) हाथ की कुल्हाड़ी और चीरने के औजार

ख) चीरने के औजार और काटने के औजार

ग) ब्लेड, क्रोड़, नुकीले औजार और नवचन्द्राकार औजार

घ) काटने के औजार और पत्तर

2 निम्नलिखित स्थानों में मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं:

क) कोठारी नदी

ख) ताप्ती नदी

ग) गोदावरी डेल्टा

घ) कोठारी नदी, ताप्ती नदी और गोदावरी डेल्टा

3 निम्नलिखित कथनों में से सबसे सही कथन कौन सा है:

क) मध्य पाषाण युग के लोगों का जीवन यापन जानवरों के शिकार पर निर्भर था।

ख) उनका जीवन जंगली कंदमूल फल के संग्रह पर निर्भर था।

ग) वे जानवरों का शिकार करते थे और जंगली फलों का संग्रह करते थे।

घ) उनका जीवन अधिशेष खाद्य उत्पादन पर निर्भर था।

4 मध्य पाषाण युग के औजारों और चित्रकला के आधार पर मध्य पाषाण युग के जीवन-यापन ढांचे और सामाजिक संगठनों पर प्रकाश डाले। (10 पंक्तियों में)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3.4 सारांश

शिकारी/संग्रहकर्ता प्रागैतिहासिक समुदायों का अध्ययन पुरातात्विक अवशेषों पर आधारित है। इस अध्ययन में मानवशास्त्रीय सिद्धांत सहायता प्रदान करते हैं। सामाजिक विकास के क्रम में पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग शिकारी/संग्रहकर्ता अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। जलवायु में हुए परिवर्तन और पत्थर के औजारों की प्रकृति के आधार पर पुरापाषाण संस्कृति को तीन अवस्थाओं में विभक्त किया जा सकता है। आरंभिक पुरापाषाण के औजार हाथ की कुल्हाड़ियां, चीरने और काटने के औजार हैं। मध्य पुरापाषाण युग के मुख्य औजार पत्तर हैं। उच्च पुरापाषाण संस्कृति के मुख्य औजार तक्षणी और खुरचनी हैं। मध्य पाषाण युग 8000 ई. पू. से शुरू होता है। इस युग में जलवायु में परिवर्तन हुए। इस दौरान सूक्ष्म औजार और छोटे पत्थर के औजार बनाने की दिशा में तकनीकी विकास भी हुए। मध्यपाषाण औजारों में ब्लेड, क्रोड़, नुकीले औजार, त्रिकोणीय औजार और नवचंद्राकार औजार मुख्य हैं।

जीव जन्तुओं के अवशेषों से भी पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग के लोगों के जीवन यापन के बारे में काफी जानकारी मिलती है। पुरापाषाण युग में लोग मुख्यत: शिकारी/संग्रहकर्ता थे। ये

लोग बड़े और छोटे आकार के पशुओं जैसे हाथी, बैल, नीलगाय, हिरण, जंगली भालू और कई प्रकार के पक्षियों का शिकार करते थे। इसके अतिरिक्त ये फल, बीज आदि का भी आहार के रूप में प्रयोग करते थे। मध्य पाषाण युग में भी मनुष्य शिकारी/संग्रहकर्त्ता ही था। हालांकि कुछ नये जानवर जैसे जंगली बकरा, लोमड़ी आदि भी इस काल में पाए जाते थे। पुरापाषाण युग और मध्य पाषाण युग की शिकार प्रवृत्ति में एक मूलभूत अन्तर है। पुरापाषाण युग में लोग बड़े जानवरों का शिकार करते थे जबकि मध्य पाषाण युग में छोटे जानवरों का भी शिकार किया जाने लगा और मछलियाँ मारी जाने लगीं। प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला उस युग के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालती है।

3.5 शब्दावली

एश्यूलियन (Acheulian) : यह एक प्रकार की हाथ की कुल्हाड़ी है। ये कुल्हाड़ियां आरंभिक हिम युग के दिनों की हैं, ये सबसे पहले फ्रांस में पायी गयी हैं।

शिल्प अवशेष: कोई ऐसी वस्तु जो मनुष्य द्वारा बनाई तथा उपयोग में लाई जाए। इसके अन्तर्गत अपरिष्कृत पत्थर से लेकर आधुनिक तकनीक से बनी कोई भी वस्तु शामिल हो सकती है।

संकलन: विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का समुच्चय जिनका आपस में अंतर्सम्बंध हो। जब यह संकलन अनेक बार पाया जाता है और मानव गतिविधि का पूर्ण रूप से विवरण देता है तब उसे संस्कृति कहते हैं।

व्यासमापन: रेडियो कार्बन तिथि अंकन में इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

अवतल: अन्दर की तरफ धंसा हुआ, बीच की परत किनारे की परत से पतली।

उत्तल: बाहर की तरफ उठा हुआ और बीच का भाग, किनारे की अपेक्षा मोटा।

मानवजाति वर्णन: इसमें संस्कृतियों का विस्तृत वर्णन पाया जाता है।

पारिस्थितिकी: पशु जीवन और पौधों के जीवन का अंतर्सम्बन्ध।

पुरालेखशास्त्र: इसमें शिलालेखों का अध्ययन किया जाता है।

वनस्पति: इस विज्ञान के अंतर्गत पौधों के जीवन का अध्ययन किया जाता है।

जीव-जंतु विज्ञान: इसमें पशुओं के जीवन का अध्ययन होता है।

भू-विज्ञान: इसमें पृथ्वी की बनावट, संरचना और इतिहास का अध्ययन होता है।

हिमाच्छादन: ठंडी जलवायु का काल जिसमें बर्फ की मात्रा अधिक थी, कई हिमाच्छादन मिलकर एक हिम-युग बनाते हैं।

स्तनधारी: ऐसे जानवर जो अपने बच्चों को स्तनपान कराते हैं।

मुद्राशास्त्र: इसमें मुद्रा का अध्ययन किया जाता है।

पराग विश्लेषण: इस तकनीक का उपयोग कालक्रम स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसमें फूलों के पराग का विश्लेषण किया जाता है।

नर वानर: स्तनधारी जीव (मानव, बंदर, लंगूर आदि)।

आयत: समकोण चतुर्भुज।

सरल रेखीय: जिसमें सीधी रेखा हो।

रेडियो कार्बन: ऐसी विधि जिसके द्वारा 70,000 वर्ष पुरानी कार्बनिक वस्तु के काल का पता लगाया जा सकता है। पौधे और अन्य जीव अपने जीवन काल में वातावरण से कार्बन ग्रहण करते हैं। इसमें कार्बन 14 (14सी) भी रहता है, जो रेडियोधर्मी तत्व है। पौधों और जीवों के मरने के बाद इस कार्बन की मात्रा कम होने लगती है। इस प्रकार कार्बन की मात्रा से अवशेषों की पुरातनता का पता चल जाता है।

अनुप्रस्थ: चौड़ाई के मुताबिक।

कगार: नदी के किनारों के आसपास की जमीन।

3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) क, 2) घ, 3) क, 4) घ, 5) घ

बोध प्रश्न 2

1) ग, 2) घ, 3) ग

4) इस प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया में आपको अपनी कल्पना का सहारा लेना होगा और आपको समझना होगा कि किस प्रकार दीवारों पर बने चित्र तत्कालीन जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, एक चित्र जिसमें कुछ लोग मिलकर जानवर का शिकार कर रहे हैं, इससे छोटे सामाजिक समुदायों की स्थापना के विषय में पता चलता है। इससे उनकी आहार प्रवृत्ति और औजारों के प्रकार का भी पता लगाया जा सकता है। देखें उपभाग 3.3.1 ।